Annexure VII CAT III/A X Page-8
Date of Publication of Paper
Jan-March 2019

ISSN 2277-5587
Impact Factor 4.215
Indexed in ULRICH, ISIFI, SJIF & DOJI

# Shodh Shree

(A Peer Reviewed International Refereed Journal)

# शोध श्री

Volume-30 Issue-1 January-March 2019 RNI No. RAJHIN/2011/40531

SHODH SHREE
ज्ञानं भारः क्रियां विना
RNI RAJHIN/2011/40531
ISSN 2277-5587

CHIEF EDITOR
Virendra Sharma

EDITOR
Dr. Ravindra Tailor

shodhshree@gmail.com
www.shodhshree.com

Annexure VII (A.T. III(A)) (Page - 9) Cont


# Shodh Shree

( A Peer Reviewed International Refereed Journal)


## Contents


**Volume-30** **Issue-1** **January-March 2019**



1. मध्यकालीन भारत में साहित्य के विकास में हिजड़ा वर्ग का योगदान — 1-5
   प्रो. एस. पी. व्यास, नई दिल्ली

2. जनजातियों में प्रचलित सामाजिक मान्यताओं एवं परंपराओं का ऐतिहासिक अध्ययन: अलीराजपुर जिले के विशेष संदर्भ में — 6-8
   भुरबाई बघेल, इन्दौर (मध्यप्रदेश)

3. शिक्षण प्रशिक्षण में संवृत्तिक कार्यकलाप : एक विवेचन — 9-14
   डॉ. सुभाष सिंह, अमेठी (उत्तरप्रदेश)

4. व्यंग्य साहित्य और डॉ. मदन केवलिया — 15-18
   उमा जाँगिड़, अजमेर

5. आदिनिवासी भील : परिचय एवं उत्पत्ति — 19-22
   फत्ताराम नायक, जोधपुर

6. [redacted]

7. 20वीं शताब्दी में पेयजल के स्रोतों में प्रयुक्त विज्ञान व तकनीक — 26-30
   ओमप्रकाश, जोधपुर

8. सूखता हुआ तालाब की आंचलिकता — 31-35
   डॉ. माया सगरे लक्का, बेंगलुरु (कर्नाटक)

9. डॉ. आनन्द कुमारस्वामी की राजनीति की अवधारणा — 36-40
   डॉ. अनुज कुमार मिश्रा, कानपुर (उत्तरप्रदेश)

10. श्रीकान्ताचार्य विरचित 'युगनिर्माताः स्वामी दयानन्द' महाकाव्य में राष्ट्रमूलक संदर्भ — 41-47
    डॉ. आशुतोष पारीक एवं सुनीता मीरवाल, अजमेर

11. अभिलेखों के आधार पर राजस्थान में शैव धर्म : एक ऐतिहासिक अध्ययन — 48-53
    विमल कुमार कोली, जयपुर

12. राजस्थान में पर्यटन उद्योग:सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन पर प्रभाव का समीक्षात्मक अध्ययन — 54-57
    श्रवण कुमार प्रजापत, बीकानेर एवं डॉ. संजीव कुमार बंसल, नोहर

13. गणेश मंदिर रातानाड़ा, जोधपुर — 58-60
    डॉ. प्रतिभा सांखला, जोधपुर

14. बालक की उफनती दुनिया : आपका बंटी — 61-65
    डॉ. सुनीता सिपाल, अजमेर


26 77 / 107

Deepti

Annexure-VII (A) III (A)
(Page-10) Cont.

# समस्याओं के बहुआयामी परिप्रेक्ष्य और डॉ. मधु संधु की कहानियां

डॉ. दीप्ति
सहायक प्रोफेसर, हिन्दू कॉलेज, अमृतसर (पंजाब)

www.shodhshree.com

*शोध सारांश*

*आधुनिक साहित्य में वर्तमान विविध सामाजिक समस्याओं का बोध मुख्य स्वर है। प्रस्तुत शोध पत्र में डॉ. मधु संधु की कहानियों के सन्दर्भ में सामाजिक यथार्थ का जीवन्त खाका चिन्हित है। 21वी सदी के परिप्रेक्ष्य में जीवन के आन्तरिक संघर्षो एवं जटिलताओं का संवेदनात्मक स्तर पर चित्रण है। प्रस्तुत कहानियों में समाज के दोहरे व्यक्तित्व का वास्तविक रूप प्रस्तुत करते हुए कुटिलता, लोभ तथा स्वार्थपरता इत्यादि को रेखांकित किया है।*

*संकेताक्षर : दलित समस्या, विदेशी प्रवास के प्रति आकर्षण, भ्रष्टाचार, दाम्पत्य संबंधों में तनाव एवं टूटन, नौकरी में उच्च अधिकारियों द्वारा अधीनस्थ कर्मचारियों का शोषण।*

आधुनिक साहित्य में यथार्थ जीवन को समग्रता से देखते हुए उसकी एक निश्चित रूपरेखा निर्धारित करना दुष्कर कार्य है। आज का साहित्यकार पाठकों को वर्तमान समाज की समस्याओं के प्रति जागरूक करने का प्रयास कर रहा है। इसके अतिरिक्त आधुनिक साहित्य में जीवन के आन्तरिक संघर्षो एवं जटिलताओं का संवेदनात्मक स्तर पर चित्रण है।

आधुनिक हिन्दी साहित्यकारों में डॉ. मधु संधु की लेखनी सशक्त हस्ताक्षर के रूप में प्रख्यात है। उनके साहित्य में सामाजिक यथार्थ का जीवन्त खाका चिन्हित है। प्रस्तुत शोध पत्र में उनके कहानी-संग्रह 'नियति और अन्य कहानियां' में संकलित कहानियों- 'रोटेशन', 'इन्सट्रक्टर', 'विदेश यात्रा' तथा 'आपात्काल' को प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत कहानियों में लेखिका ने समाज के दोहरे व्यक्तित्व का वास्तविक रूप प्रस्तुत करते हुए कुटिलता, लोभ तथा स्वार्थपरता इत्यादि को रेखांकित किया है। आधुनिक भौतिकवादी एवं पदार्थवादी मानसिकता से ग्रस्त विकसित समाज के खालीपन को भी सफलतापूर्वक चिन्हित किया गया है। इन कहानियों में लेखिका ने समाज की विविध समस्याओं-दलित समस्या, विदेशी प्रवास के प्रति आकर्षण, भ्रष्टाचार, दाम्पत्य संबंधों में तनाव एवं टूटन, नौकरी में उच्च अधिकारियों द्वारा अधीनस्थ कर्मचारियों का शोषण आदि को उजागर किया है।

'रोटेशन' में समाज के उच्च अधिकारियों द्वारा अधीनस्थ कर्मचारियों के शोषण के कटु यथार्थ को रेखांकित किया गया है। प्रस्तुत कहानी का पात्र वर्षों टेम्परेरी नौकरी के दौरान ऊपर वालों की जी हजूरी से परमानेंट हो जाता है। "अध्यक्षीय तानाशाही के अनेक अत्याचार उन्होंने स्वयं झेले-भोगे थे। अभी तो सारे जख्म हरे थे। उनींदी रातों की टीसें सुगबुगा रही थी। अपमानों की पीड़ा पुरानी नहीं पड़ी थी। .....सब सैट करना होगा..... उन्होंने सोचा और चिन्तन की दिशाओं में डूब गए।"[1] विक्षागाध्यक्ष बनने के पश्चात् अपनी पत्नी को कस्बे के प्राइमरी स्कूल से स्थानांतरण करवाकर शहर के प्लस-टू-स्कूल में लेक्चरर लगवा देते है। "किसी के भी काल्पनिक यात्रा भत्ते पर, लोन पेपर्ज पर, प्रोग्रेस रिपोर्ट पर, कन्फर्मेशन लैटर पर, पी. एच.डी. की इनरोलमैंट पर वे झटके से हस्ताक्षर नहीं करते थे। ऐसा करने से आदमी का मूल्य कम हो जाता है- इसकी उन्हें समझ थी।"[2] उन्हें हमेशा चापलूसों से घिरे रहना पसंद है।



ISSN 2277-5587 023



Deepti

Annexure VII CAT III (A) (Page-10 cont.

प्रस्तुत कहानी में दलित वर्ग के शोषण की भी यथार्थ अभिव्यक्ति है। प्रस्तुत कहानी में 'नानो' विभागाध्यक्ष के घर काम करती है। काम के बहुत बढ़ने पर भी उसके वेतन को बढ़ाया नहीं जाता है। नानो अपने इकलौते +2 पास पोते बिट्टू की नौकरी का अनुरोध विभागाध्यक्ष से करती है। इसके बदले वे दोनों उन्हें खुश करने के लिये उनकी जी हजूरी के अतिरिक्त घर-बाहर के सारे काम निपटाने लगते है। विश्वविद्यालय में इकट्ठे पन्द्रह रिक्त स्थान निकलते है। लेकिन अब उनकी विभागाध्यक्ष की अवधि खत्म होने पर है। बिट्टू का नाम सलैक्शन में तो क्या वेटिंग लिस्ट में भी नहीं आता है।

प्रस्तुत कहानी दोहरे शोषण को रेखांकित करती है। क्या ऑफिस, क्या घर मौका मिलना चाहिए। शोषित समय आने पर भूल जाते हैं कि वह कितने दुर्दिनों से गुजरे है और दूसरों के लिये खाईयां खोदने या झूठे लालच देकर शोषण के सारे हथकंडे अपनाते है।

'इन्सट्रक्टर' कहानी आधुनिक दौर में बदलती जीवन शैली में बढ़ते तनाव, अधिक से अधिक धन कमाने का लोभ तथा संयम के अभाव में पती-पत्नी के दाम्पत्य सम्बन्ध में मधुरता से लेकर कटुता एवं टूटन की कहानी है।

प्रस्तुत कहानी में मध्यवित्त परिवार के शिक्षित बेरोजगार अनुभव के जीवन में तब बहार आ जाती है जब एक संगणक केन्द्र में कोर्स के दौरान उसकी कॉलेज की पुरानी सहपाठिन नीनू से प्रगाढ़ मैत्री प्रेम में बदल जाती है। "अनुभव जितना चुप्पा था, नीनू उतनी वाचाल। अनुभव जितना निराशावादी था, वह उतना ही आशान्वित। मूलतः मध्यवित्त परिवार का होने के कारण अनुभव में जितनी हीनभाव के कम्पलैक्सेज थे। उच्चवर्गीय होने के कारण नीनू में उतनी ही प्रभुत्व कामना।"[3] अनुभव को स्थानीय डी.ए.वी. कॉलेज में परमानेंट नौकरी मिलना मानों सोने पर सुहागा जैसी उक्ति बिल्कुल औचित्यपूर्ण है। नीनू के प्रैगनेन्ट होने पर अनुभव की माँ तीन माह के लिये उसके पास रहने आती है। नीनू को नापसन्द करने वाली अनुभव की माँ अक्सर नीनू की बुराईयाँ कर अनुभव को भड़काती है। "माँ के जाने के लगभग एक वर्ष बाद उसे नीनू बेशऊर, आत्मतलब, आत्मकेन्द्रित, स्वार्थी, फिजूलखर्च लगने लगी।"[4] एक दिन दोनों के बीच झगड़ा बढ़ने पर नीनू मायके में रहने चली जाती है। वहां दो वर्ष रहने के दौरान फैशन डिजाइनिंग की डिग्री ले लेती है। पहल करते हुए अनुभव नीनू-अनुभा को ले आता है। इस समय दोनों समझौता कर विवाह को निभाने के पक्ष में प्रतीत होते है। अब अनुभव में खूब धन कमाने की लालसा घर कर जाती है। वह कॉलेज की नौकरी के साथ-साथ विद्यार्थियों को ट्यूशन्स पढ़ाता तथा संगणक केन्द्र में कार्य करता है। एक बार अनुभा द्वारा ट्यूशन्स के कमरे में बार-बार तांक-झांक करने पर अनुभव अनुभा को थप्पड़ मारकर हाथ उठाने से भी संकोच नहीं करता। इस घटना के पश्चात् चिढ़चिढ़ेपन के आदी अनुभव का यह रूप अनुभा के लिये असहनीय हो जाता है। नीनू अनुभा के साथ विदेश में जाकर बस जाती है। इधर अनुभव अकेलेपन से दूर रहने की कोशिश में दिन-रात मेहनत में जुट जाता है। "भौतिक स्तर पर वह जीवन की "डैमारैश" बाईक रेस में भले ही बहुत आगे आ चुका है, पर उसके जीवन की "स्क्रीन सेवर" अनुभा और नीनू है जो हर खाली पल में उस पर छाई रहती है।"[5]

प्रस्तुत कहानी विभा और अनुभव के द्वारा समाज के उन दम्पतियों की कहानी है जो परस्पर विश्वास, संतोष और धैर्य के अभाव में एकाकी जीवन जीने को विवश होते है। वे धन-दौलत और शोहरत तथा आरामदायक जीवन जीने के साधन तो जुटा लेते है पर प्रेमपूर्ण संबंधों एवं अपनत्व के अभाव में आनन्दपूर्ण जीवन जीने से वंचित रह जाते है।

'विदेश यात्रा' कहानी आज के दौर के शिक्षित युवकों के विदेश यात्रा के मोह को उजागर करती है जो विदेश यात्रा के अपने दिवास्वप्न को सत्य करने के लिए सब हथकंडे अपनाते है परन्तु अन्त में शोषण के चक्रव्यूह में फंसकर हाथ मलते रह जाते हैं। प्रस्तुत कहानी में एन्ट्रैंस टैस्ट की तैयारी करवाती गणमान्य संस्थाओं के स्याह-सफेद धंधे का भी पर्दाफाश किया गया है। ये संस्थाएं विद्यार्थियों के सफल होने की आकांक्षा का लाभ उठाते हुये कोचिंग क्लासेस तथा ट्यूशन्स को धन कमाने का साधन बनाती हैं।

प्रस्तुत कहानी में प्रो. अरोड़ा की इच्छा को भांपते हुये प्रो. अमर सिंह उन्हें विदेश यात्रा का झाँसा देकर अपने बेटे के एन्ट्रेन्स टैस्ट की सफलता को सुनिश्चित करते है। प्रो. अरोड़ा विदेश यात्रा का सुख और विदेश रिटर्न्ड की स्टैम्प पाने के लिये हरसंभव प्रयत्न करते है। कभी विदेश से लौटे परिचितों के लिये भोज का अयोजन करते तो कभी विदेशी विश्वविद्यालयों में कम्पयूटराईज्ड बायोडाय के साथ प्रार्थना पत्र भेजते है। रोटरी क्लब इत्यादि के द्वारा भी वह अपना सपना साकार करने का पूरा प्रयास करते है। ऐसे समय में उनकी मुलाकात एक बाबा से होती है। महल जैसे योगाश्रम के आवास में रहने वाले बाबा जी से



79

ISSN 2277-5587

Deepti

Annexure VII (AT III (A)
(Page-12) Cont.

मिलकर उन्हें निकट भविष्य में अपने विदेश भ्रमण का सपना साकार होता हुआ प्रतीत होता है। आधुनिक उपकरणों का प्रयोग करने वाले बाबा जी और उनके आश्रम के नशीले वातावरण में भक्तों को सम्मोहित करने की पूरी क्षमता है। विदेश जाने की लालसा और बाबा जी के आश्वासन उन्हें कभी न भूलते है, जिसके चलते वह आश्रम को समय-समय पर आर्थिक संकट से उभारने में पूरी मदद करते हैं। "आश्चर्य उन्हें तब हुआ जब पता चला कि वे भक्तिनों के साथ कीर्तन करते रहे है और बाबा जी मैनहैट्टन पहुँचकर एक नया ट्रस्ट और आश्रम बनाने में व्यस्त हो गए है।"[6]

प्रस्तुत कहानी में आधुनिक व्यक्ति की विदेश में जाकर धन-दौलत कमाकर आर्थिक स्टेटस बनाए रखने के साथ-साथ ऐश्वर्य और यश पाने की लालसा का यर्थाथ वर्णन है। इसी लालसा में फंसकर युवक शोषण के दलदल में धंसकर अपना सर्वस्व गँवा बैठते है और समय निकल जाने के बाद पश्चाताप एवं संताप के अलावा उनके हाथ कुछ नहीं आता है।

'आपात्काल' कहानी में भ्रष्ट सरकारी कर्मचारी की कहानी है जो अक्खड़ होने के साथ ही पत्नी पर अत्याचार करना एवं अपमानित करना अपना अधिकार समझता है। "उनकी बस तीन ही कमजोरियां थीं आरामतलबी, ऐश और पैसा।"[7] वह कमाऊ, सुघड़ पत्नी पर पूरा नियन्त्रण रखते है। उनका मानना है, "जहां हद से आगे बढ़ती दीखे, वहीं ठप्प कर दो।"[8] वह ऑफिस की तलाकशुदा कुलीग के साथ अफेयर चलाने से भी नहीं चूकते है। अपने अधीनस्थ कर्मचारियों पर ऑफिस "आते ही डांट-फटकार, अपमान-तनाव का ऐसा चक्कर चलाते हैं कि पूरा ऑफिस कम्पायमान हो उठता।"[9] वह नौकरी की अपेक्षा अपने कास्मैटिक स्टोर चलाने पर अधिक ध्यान देते है। एक बार किसी इण्डस्ट्रियलिस्ट की फाईल उनके पास अटकने से सीधे सस्पैंशन के आर्डर आ जाते है, जिसे निपटाते उन्हें दो वर्ष का समय लगता है। एक दिन उनका बिगड़ैल बेटा दुकान से आधा सामान तथा गल्ले के पैसे लेकर भाग जाता है। "बेटे के घर से भाग जाने के कारण को लेकर पत्नी ने उनकी अवमूल्यित स्थिति को भी नकार दिया। ..... 600 किलोमीटर दूरी के ट्रांसफर आर्डर-जो उन्हें अवसन्न कर गये। दुकान पर हजारों की चोरी-यानी चारों ओर से सिर पर ओले पड़ रहे थे।"[10] कहते है कि अपने बुरे कर्मों का हिसाब यही चुकाना पड़ता है और उनके कुकर्मों का यही हिसाब आज उन पर भारी पड़ता प्रतीत होता है।

'आपात्काल' का नायक खलनायक के सारे अहं को समेटे अपने प्रभुत्व कामना में दहाड़ता हर पल एक नये शोषण तंत्र का सृजन करता है। वह आत्म केंद्रित हीमैन है। इन्हीं प्रवृतियों के कारण उसका दाम्पत्य बिखरा सा रहता है। बेटा अनियन्त्रित हो जाता है और नौकरी का स्थायीत्व हाथ से फिसलने लगता है।

लेखिका की उपरोक्त कहानियों में वर्तमान विविध सामाजिक समस्याओं का बोध मुख्य स्वर है। इनकी कहानियां एक ही चौखटे की आवद्ध न होकर विविधरूपा है, जिनमें समकालीन अनुभूति की सच्चाई, संवदेना और अभिव्यक्ति का प्रखर स्वर है। लेखिका प्रस्तुत कहानियों के कथ्य को अधिक-से-अधिक प्रभावशाली बनाकर संप्रेषित करने में सफल रही है। इन कहानियों में सपाट-स्थूल सी दिखती घटनाओं के पीछे के अदृश्य सत्य, अर्न्तविरोधों एवं विसंगतियों को परत-दर-परत उजागर किया गया है। इनकी कहानियों में अभिनव शैली, रचनात्मक वैविध्य, संवेदना की भावप्रवणता भी परिलक्षित है।

*सन्दर्भ ग्रन्थ सूची*


1. *डॉ. मधु सन्धु, नियति और अन्य कहानियां, रोटेशन, (दिल्ली : शब्द संसार प्रकाशन, 2001), पृ. 23.*
2. *डॉ. मधु सन्धु, नियति और अन्य कहानियां, रोटेशन, (दिल्ली : शब्द संसार प्रकाशन, 2001), पृ. 24.*
3. *डॉ. मधु सन्धु, नियति और अन्य कहानियां, इन्सट्रक्टर, (दिल्ली : शब्द संसार प्रकाशन, 2001), पृ. 29.*
4. *डॉ. मधु सन्धु, नियति और अन्य कहानियां, इन्सट्रक्टर, (दिल्ली : शब्द संसार प्रकाशन, 2001), पृ. 30.*
5. *डॉ. मधु सन्धु, नियति और अन्य कहानियां, इन्सट्रक्टर, (दिल्ली : शब्द संसार प्रकाशन, 2001), पृ. 31.*
6. *डॉ. मधु सन्धु, नियति और अन्य कहानियां, विदेश यात्रा, (दिल्ली : शब्द संसार प्रकाशन, 2001), पृ. 77.*
7. *डॉ. मधु सन्धु, नियति और अन्य कहानियां, आपात्काल, (दिल्ली : शब्द संसार प्रकाशन, 2001), पृ. 78.*
8. *डॉ. मधु सन्धु, नियति और अन्य कहानियां, आपात्काल, (दिल्ली : शब्द संसार प्रकाशन, 2001), पृ. 79.*
9. *डॉ. मधु सन्धु, नियति और अन्य कहानियां, आपात्काल, (दिल्ली : शब्द संसार प्रकाशन, 2001), पृ. 80.*
10. *डॉ. मधु सन्धु, नियति और अन्य कहानियां, आपात्काल, (दिल्ली : शब्द संसार प्रकाशन, 2001), पृ. 82.*




Deepti